



श्री काशिकामकोटि जगद्गुरुभ्योनमः
श्रीमहागणपतये नमः

SUB : METHOD OF VARNAKRAMA CHANTING

Description of Varnakramas are classified under five heads.

1. Suddha Varna krama (शुद्धवर्णक्रमः)
2. Swaravarnakrama (स्वरवर्णक्रमः)
3. Matravarnakrama (मात्रावर्णक्रमः)
4. Angavarnakrama (अङ्गवर्णक्रमः) and
5. Varna Saaabhutha varna Krama. (वर्णसारभूतवर्णक्रमः)

1. शुद्धवर्णक्रमः

In suddha varnakrama the mere letters in a word are uttered in the order.

2. स्वरवर्णक्रमः

In swara varnakrama the letters in a word are mentioned in the order with the addition of prayathna and Swara to the Vowels.

3. मात्रावर्णक्रमः

In Maatra varna krama the time taken for the utterance of every letter in a word is revealed.

4. अङ्गवर्णक्रमः

In anga varnakrama whether a consonant (व्यञ्जनं) is the former or the latter part of a vowel is disclosed.

5. वर्णसारभूतवर्णक्रमः

In varna saara bhuta varnakrama the eight angas. ध्वनि, स्थानं, करणं, प्रयत्नः, कालः, सवरः, देवता and जातिः Every letter in a word.



त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीयमातृतात्॥ इत्यत्र त्र्यम्बकं इत्यस्य पदस्य पञ्चविधवर्णक्रमपाठः उच्यते

1. त्र्यम्बकम्

(शुद्धवर्णक्रमः) तकार रेफ यकार अकार, मकार बकार अकार, ककार अकार, नादसंज्ञकमकाराः ॥

2. त्र्यम्बकम्

(स्वरवर्णक्रमः) तकार रेफ यकार दृढतर प्रयत्न क्षैप्रस्वरित अकार, मकार बकार प्रचय अकार, ककार प्रचय आकार नाद संज्ञक मकाराः ॥

3. त्र्यम्बकम्

(मात्रावर्णक्रमः) अर्धमात्रिकतकार, अणुमात्रिकरेफ, अर्धमात्रिक यकार, एकमात्रिक दृढतर प्रयत्न क्षैप्रस्वरित अकार अर्धमात्रिकविराम।

अणुमात्रिक मकार अर्धमात्रिक बकार एकमात्रिक प्रचय अकार अणुमात्रिक विराम,
अर्धमात्रिक ककार एकमात्रिक प्रचयअकार अणुमात्रिकविराम, द्विमात्रिक नादसंज्ञक मकार द्विमात्रिक विरामाः ॥

4. त्र्यम्बकम्

(अङ्गवर्ण क्रमः) अणुमात्रिक पराङ्गभूततकार, अणुमात्रिकपराङ्गभूत रेफ, अर्धमात्रिक पराङ्गभूत यकार, एकमात्रिक दृढतरप्रयत्न क्षैप्र स्वरित अकार, अर्धमात्रिक विराम।

अणुमात्रिक पूर्वाङ्गभूतमकार, अर्धमात्रिक परङ्गभूतबकार, एकमात्रिक प्रचय अकार, अणुमात्रिक विराम।

अर्धमात्रिक पराङ्गभूत ककार एकमात्रिक प्रचय अकारं अणुमात्रिक विराम, द्विमात्रिक पूर्वाङ्ग भूत नाद संज्ञक मकार द्विमात्रिक विरामाः ॥



- (त) **(वर्णसारभूतवर्णक्रमः)** विवृत कण्ठोत्थित विवाराधोषाल्प प्राणाख्य बाह्यप्रयत्न विशिष्ट श्वासध्वनिजनित उत्तरदन्तमूल धोभागस्थान जिह्वाग्रकरण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायुदेवताक ब्राह्मणजातिक तकार,
- (र) संवृतकण्ठोत्थितसंवारघोषाल्प प्राणाख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनिजनित उत्तरदन्तमूल प्रत्याभागस्थान जिह्वाग्रमध्य करणेषत्स्पृष्ट प्रयत्नाणुमात्रिक पराङ्गभूत अग्निदेवताक वैश्यजातिक रेफ।
- (य) संवृतकण्ठोत्थितसंवारघोषाल्प प्राणाख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित तालुस्थान जिह्वामध्य पार्श्वभागकरणेषत्स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायु देवताक वैश्वजातिक यकार ।
- (अ) संवृतकण्ठोत्थित संवाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनि जनित अत्युपसंहृत कल्पहनुस्थान तथा भूतौष्ठ करण संवृत प्रयत्नैक मात्रिक,

चन्द्र देवताक वैश्य जाति रजोगुण सहितानामिकाङ्गुल्यन्त्यरेखा न्यासयोग्य उच्चैष्ट्र नीचैष्ट्र धर्मद्वय समाहृति जनित तदाश्रय विजातीय गजबृंहित तुल्य निषाद स्वरहेतु भूतकर्णमूलस्थानोत्पन्न दृढतर प्रयत्न क्षैप्रस्वरित स्वरगुणक वायुदेवताक ब्राह्मण जात्यकार अर्धमात्रिक विराम।

- (म) संवृत कण्ठोत्थितसंवारघोषाल्पाणाख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित विवृतनासिकोत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठ करण स्पृष्ट प्रयत्नाणुमात्रिक पूर्वाङ्गभूत सूर्य देवताक वैश्य जातिकमकार,
- (व) संवृत कण्ठोत्थित संवारघोषाल्पाणाख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित उत्तरोष्ठस्थानाधरोष्ठ करण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्ग भूत भूमिदेवताकक्षत्रिय जातिक बकार,

संवृत कण्ठोत्थि संवाराख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित अत्युपसंहृत कल्प हनुस्थान तथा भूतौष्ठकरण संवृत प्रयत्नैक मात्रिक ।

(प्रचयस्य) सूर्य देवताक शूद्र जाति तमोगुण सहित मध्यमाङ्गुलि मध्य रेखान्यासयोग्य उच्चकल्पतद्विलक्षणक्रौञ्च कणनतुल्य मध्यमस्वरहेतु भूत सर्वास्यस्थानोत्पन्न प्रचयस्वरगुणक वायु देवताक ब्राह्मण जात्यकार अणुमात्रिक विराम।



जिह्वामूलकरण स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत वायुदेवताक ब्राह्मण जातिक ककार,

(अ) संवृत कण्ठोत्थित संवाराख्यबाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित अत्युपसंहृत कल्प हनुस्थान
तथा भूतौ करण संवृत प्रयत्नैक मात्रिक,

सूर्यदेवताक शूद्रजाति तमोगुण सहित मध्यमाङ्गुलि मध्य रेखान्यासयोग्य
उच्चकल्पतद्विलक्षणक्रौञ्च कणनतुल्य मध्यमस्वरहेतु भूत सर्वास्यस्थानोत्पन्न प्रचयस्वरगुणक वायु
देवताक ब्राह्मण जात्यकार अणुमात्रिकविराम।

संवृत कण्ठोत्थिसंवारघोषालपाणाख्य बाह्यप्रयत्नसहित नाद ध्वनि जनित नासिकोत्तरोष्ठ
स्थानाधरेष्ठकरण स्पृष्ट प्रयत्न द्विमात्रिक पूर्वाङ्ग-भूत सूर्यदेवताक वैश्व जाति नादसंज्ञकमकार, द्विमात्रिक
विरामाः ॥ त्र्यम्बकम् ओम् ॥

॥ शुभम् भूयात् ॥

From
HUMBLE AASTHIKAS